पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा का चिर वियोग

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के मंत्री **पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा** का 78 वर्ष की आयु में दिनांक 16 फरवरी, 2013 की रात्रि में चिर वियोग हो गया है।

आदरणीय बाबूजी टोडरमल स्मारक के आधार स्तम्भ थे। ट्रस्ट द्वारा संचालित सभी गतिविधियों में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहता था, उनके वियोग से संस्था का एक महत्वपूर्ण आधारस्तम्भ ढह गया है। विद्यार्थियों के प्रति भी उनका अगाध प्रेम एवं वात्सल्य भाव रहता था, विद्यालय एवं विद्यार्थियों की उन्नति के लिए वे सदैव चिन्तित एवं प्रयत्नशील रहते थे, उनकी उन्नति देख-देखकर उनका मन उत्साह से भर जाता था। उनका स्नेहपूर्ण व्यवहार सभी को सदा याद आयेगा।

सचमुच यह ऐसी अपूरणीय क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति तो संभव है ही नहीं; उनके वियोग को सह पाना और सहज हो जाना भी सरल नहीं है।

आप मूलत: भीलवाड़ा (राज.) के नेवरिया ग्राम के निवासी थे। आपका जन्म दिनांक 10 नवम्बर 1935 को हुआ। आपने इन्दौर में लौकिक शिक्षा प्राप्त कर कपड़े का व्यापार प्रारंभ किया। सन् 1953 में आपका विवाह उज्जैन निवासी श्री हीरालालजी बड़जात्या की धर्म संस्कार सम्पन्न सुपुत्री श्रीकान्ताबाई से हुआ।

सन् 1955-56 में आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का इन्दौर पधारना हुआ और उनके प्रवचनों से प्रभावित होकर आप दोनों को अध्यात्म की ऐसी रुचि लगी कि आपने सोनगढ़ जाना प्रारंभ किया। लगभग 25 वर्ष तक प्रतिवर्ष तीन-चार महीने सोनगढ़ ही रहते थे।

अनेक वर्षों के सोनगढ़ प्रवास में आदरणीय बाबूभाई मेहता आदि अनेक गुजराती मुमुक्षु भाईयों से आपके अत्यन्त निकट घनिष्ठ मित्रता के सम्बन्ध बने। पूज्य गुरुदेवश्री के सान्निध्य में जितनी भी बड़ी-बड़ी यात्रायें निकली उन सभी में आप सम्मिलित हुए। इन्दौर में जितनी भी आध्यात्मिक गतिविधियाँ चल रही है - उन सभी का श्रेय आपको ही जाता है। साधनानगर के जिनमन्दिर निर्माण में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आप वहाँ के ट्रस्टी भी रहे।

सोनगढ़ प्रवास के दौरान ही आप डॉ. हुकमचन्दजी व पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के सम्पर्क में आये। गुरुदेवश्री के देहावसान के बाद सन् 1989 में आप अपना व्यापार धंधा बंद करके श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर पधारे और फिर यहीं के होकर रह गये।

आप प्रतिवर्ष दशलक्षण महापर्व व अन्य अवसरों पर देश के विभिन्न स्थानों पर जाकर अपनी ओजस्वी वाणी से पूज्य गुरुदेवश्री के द्वारा प्राप्त तत्त्वज्ञान का प्रचार करते रहे। आपने जीवनपर्यंत टंकोत्कीर्ण एक ज्ञायकभाव का चिन्तन-मनन करते हुए पूरा जीवन जैनधर्म की साधना में व्यतीत किया, अतः आप हमारे आदर्श हैं, अनुकरणीय हैं। **- सह सम्पादक**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2539) 356 अंक : 8

अष्ट कर्म म्हांरौ...

अष्ट कर्म म्हांरौ कांई करसी जी, हूं म्हारै ही घर राखूं राम।।टेक।।

इन्द्री द्वारै चित दौरत है, सो वशकै नहिं करस्यूं काम।।अष्ट. ।।

इनका जोर इताही मुझपै, दुख दिखलावै इन्द्रीग्राम।

जाकूं जानूं मैं नहीं मानूं, भेदविज्ञान करूं विसराम।।

अष्ट कर्म म्हांरौ... ।।1 ।।

कहूं राग कहूं दोष करत थौ, तब विधि आते मेरे धाम।

सो विभाव नहिं धारूं कबहूं, शुद्ध सुभाव रहूं अभिराम।।

अष्ट कर्म म्हांरौ... ।।2 ।।

जिनवर मुनिगुरु की बलि जाऊं, जिन बतलाया मेरा ठाम।

सुखी रहत हूं दुख नहिं व्यापत, 'बुधजन' हरषत आठौं जाम।।

अष्ट कर्म म्हांरौ... ।।3 ।।

- कविवर पण्डित बुधजनजी

छहढाला प्रवचन

8 अंग सहित सम्यक्त्व

जिन वच में शंका न धार वृष, भव-सुख-वांछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व-कुतत्त्व पिछानै।।
निज गुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निजधर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज पर को सु दिढ़ावै।।१२।।
धर्मी सों गौ-वच्छ-प्रीति सम, कर जिनधर्म दिपावै।
इन गुणतैं विपरीत दोष वसु, तिनकों सतत खिपावै।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

२. नि:कांक्षा अंग का वर्णन

धर्मीजीव धर्म के फल में भवसुख की वांछा नहीं करते, अत: वे पुण्य एवं पुण्य के फल दोनों को नहीं चाहते; धर्म से मुझे स्वर्गादि का सुख मिले - ऐसी भवसुख की वांछा अज्ञानी के होती है। ज्ञानी ने तो अपने आत्मिक सुख का अनुभव किया है, अत: अन्यत्र कहीं भी उसे सुखबुद्धि नहीं है, इसलिए वह नि:कांक्ष है। सम्यग्दृष्टि ने आत्मिक सुख का वेदन करके भवसुख की वांछा नष्ट कर दी है। यही उसका नि:कांक्षगुण है। 'भवसुख' यह अज्ञानी की भाषा में कहा है; सचमुच में भव में सुख है ही नहीं; किन्तु अज्ञानी लोग देवादि के भव में सुख मानते हैं, इन्द्रियविषयों में सुख मानते हैं, आत्मा के सुख को वे नहीं पहिचानते। अरे, सम्यग्दृष्टि तो आत्मा के सुख का स्वाद लेने वाला, मोक्ष का साधक होता है। वह संसार-भोग की इच्छा क्यों करेगा ? जिसके वेदन में जीव अनादिकाल से दु:खी हुआ, उसकी वांछा ज्ञानी कैसे करे ? भव-तन-भोग तो ज्ञानी को अनादिकाल की उच्छिष्ट के समान (वमन के समान) दिखते हैं; जीव अनन्त बार उन्हें भोग चुका है; परन्तु उनमें से सुख की एक बूँद भी नहीं मिली।

धर्म का प्रयोजन क्या है ? धर्म का प्रयोजन, धर्म का फल तो आत्मसुख की प्राप्ति है; धर्म का फल बाहर से नहीं आता। जिसने आत्मसुख का स्वाद नहीं जाना, उसके अन्तर में संसार-भोग की चाह रहती है तथा उसके कारणरूप पुण्य व शुभराग की भी रुचि उसे रहती है, अत: उसे सच्चा निष्कांक्षपना नहीं होता। भले ही वह राजपाट, घर-परिवार इत्यादि को छोड़कर त्यागी हुआ हो; परन्तु जब तक राग से भिन्न चैतन्यरस का स्वाद नहीं लिया (अनुभव नहीं किया), तब तक उसे संसार-भोग की वांछा विद्यमान रहती है और सम्यग्दृष्टि जीव राजपाट, घर-परिवार इत्यादि संयोग में रहा हो, उसके संबंधी राग भी हो, (वास्तव में तो वह अपनी चेतना में ही तन्मय रहता है, अन्यत्र कहीं नहीं वर्तता; किन्तु संयोग की अपेक्षा से राजपाट में व राग में वर्तना कहा है;) परन्तु अंतर में उन सबसे पार अपने चैतन्यरस का आनंद चख लिया है; अत: उसको उनमें कहीं स्वप्न में भी सुखबुद्धि नहीं है; अतएव राग होने पर भी श्रद्धा के बल से उसे निष्कांक्षता ही है। यह धर्मी की अलौकिक दशा है, जिसे अज्ञानी नहीं पहचान सकता और जो पहचाने उसे अज्ञान नहीं रहता।

लोग कहते हैं कि हम धर्म करेंगे, इससे धन मिलेगा और हम सुखी होंगे; किन्तु ऐसी मान्यता वाले को न धर्म की पहचान है, न सुख की। वे तो शुभराग को - पुण्य को धर्म समझ रहे हैं और उसके फल में धन आदि मिलने को सुख मानते हैं; उससे भिन्न आत्मा के अस्तित्व की उन्हें पहिचान ही नहीं है। अरे भाई ! धर्म के फल में बाहरी धन नहीं मिलता और धनादिक का मिलना किसी भी प्रकार से धर्म का प्रयोजन नहीं है। धन के लिए धर्म नहीं किया जाता। धर्म का प्रयोजन तो आत्मिक सुख है और उस सुख में धनादि की जरूरत नहीं पड़ती। वह संयोगरहित स्वाभाविक सुख आत्मा में से ही उत्पन्न होता है। ऐसे सुख को जानकर अनुभव करने वाले को संसार में अन्य किसी की भी वांछा नहीं रहती, कहीं भी सुख की कल्पना नहीं रहती।

धर्मात्मा को धर्म के साथ के राग के कारण से पुण्य बँध जाये और उस पुण्य के फल में बाहर का वैभव मिले, परन्तु धर्मी को उसकी वांछा नहीं है, वह अपने आत्मा को उससे अत्यंत भिन्न जानता है। धर्म के फल में मुझे पुत्र मिले, धन मिले - ऐसी वांछा धर्मी के नहीं है। धर्मी जीव देव-गुरु के आश्रय से लौकिक हेतु की आशा नहीं रखता। व्यापार-लग्न-वास्तु इत्यादि प्रसंग में शुभराग से भगवान को याद करे, उसमें भवसुख की वांछा का अभिप्राय धर्मी को नहीं है। जो सर्वज्ञ का भक्त हुआ,

उसे संसार की वांछा नहीं रह सकती। राग का एक कण भी मेरे ज्ञान में नहीं है - ऐसा जानने वाला ज्ञानी उस राग के फल को कैसे वांछे ? धर्म के सेवन में उसे मोक्षरूप परमसुख के सिवा अन्य किसी की भी आशा नहीं है। धर्म का फल तो वीतरागी सुख है; बाह्य वैभव या इन्द्रादि पद ये धर्म का फल नहीं है, ये तो राग के विकार का फल है। अज्ञानी उस पुण्यरूप धर्म को चाहता है; अत: वह भोगहेतु धर्म का सेवन करता है - ऐसा समयसार में कहा है; रागरहित शुद्ध आत्मा के अनुभवरूप मोक्षहेतु धर्म को वह नहीं जानता।

अंतर के अनुभव में अपने चैतन्य परमदेव का अनुभव करने वाले धर्मात्मा जानते हैं कि मेरा यह चैतन्यचमत्कार आत्मा ही मुझे परम सुख देने वाला है, इसके सिवा मैं अन्य किसकी वांछा करूँ ? अरे ! स्वर्ग का देव आवे तो भी उससे तुझे क्या लेना है? स्वर्ग के देव के आगमन की बात सुनकर अज्ञानी को तो चमत्कार लगता है और उसकी महिमा में धर्म की महिमा को भूल जाता है, क्योंकि स्वयं उसके मन में स्वर्गादिक की वांछा है। अरे, मूर्ख लोग तो सर्प-बन्दर-गाय इत्यादि तिर्यंच प्राणियों को भी देव-देवी मानकर पूजते हैं। अपने को जैन कहलाने वाले भी अनेक लोग भोग की वांछा से या रोग मिटने की वांछा से अनेक देव-देवियों की पूजा-मान्यता करते हैं, क्या मूर्ख को विवेक होता है ? अरहंत भगवान का सच्चा भक्त प्राण के छूट जाने पर भी मिथ्या देव-देवी को पूजते नहीं। वीतराग धर्म के सेवन के फल में धनादि बाह्य वस्तु मिलने की वांछा धर्मी नहीं रखते। इसप्रकार धर्मात्मा निष्कांक्ष भाव से धर्म का सेवन करते हैं।

प्रश्न - व्यापारादि में धन मिले - ऐसी वांछा तो धर्मी के भी रहती है, तब उसे निष्कांक्षपना कैसे रहा ?

उत्तर - उसे अभी उसप्रकार का अशुभराग है; परन्तु इस राग से या धन से मुझे सुख मिलेगा - ऐसी मिथ्याबुद्धिरूप वांछा उसे नहीं है। राग और संयोग दोनों से पार मेरी चेतना है, उसमें ही मेरा सुख है, ऐसा जानने वाला धर्मात्मा उस धर्मचेतना के फल में बाह्यसामग्री कभी नहीं चाहता, इसलिए वह निष्कांक्ष है। वह धर्मात्मा कदाचित् इन्द्रपद या चक्रवर्ती पद के वैभव का उपयोग करता दिखे, किन्तु उसके ज्ञान में विषय-भोगों का रंचमात्र आदर नहीं है। अरे, हम तो अतीन्द्रिय आनन्द के पिण्ड हैं, हमारे आत्मा को छोड़कर जगत् में कहीं भी हमारा आनन्द है ही नहीं। इसलिए

कहा है कि -

चक्रवर्ती की संपदा, इन्द्र सरीखे भोग।
काकबीट सम गिनत हैं, सम्यग्दृष्टि लोग।।

(उक्त दोहा इन्दौर में श्री हुकमचन्दजी सेठ के जिनमंदिर में भी लिखा है।)

विषयों के विकल्पों को धर्मीजीव दु:ख एवं जेल के समान गिनते हैं, उन्हें उसमें सुखबुद्धि नहीं है; अत: वे उसकी वांछा नहीं करते। उत्तम वस्तु खाते-पीते हो, अच्छे वस्त्र पहिनते हो, स्त्री-पुत्रादिक के बीच बैठे हो, तो क्या धर्मी उसमें सुख मानते होंगे? नहीं, जरा भी नहीं। आनन्दस्वरूप मेरा आत्मा ही है, पर में जरा भी सुख नहीं है - ऐसी निःशंक प्रतीति वाला धर्मात्मा देवलोक के सुख को भी नहीं वांछते। उसमें सुख है ही नहीं, फिर वांछा कैसी ? चैतन्य के अतीन्द्रिय आनन्द के सामने स्वर्ग के वैभव का कोई मूल्य नहीं होता। इन्द्र के वैभव में उस सुख की गंध भी नहीं आती। हाँ, सम्यग्दृष्टि-इन्द्र को आत्मा का सुख होता है; किन्तु बाह्य वैभव में तो उसकी गंध भी नहीं है और इन्द्र स्वयं भी उसमें सुख नहीं मानता। **(क्रमश:)**

परीक्षा सामग्री शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) की शीतकालीन परीक्षायें सभी केन्द्रों पर दिनांक 27, 28 और 29 जनवरी 2013 को सम्पन्न हो चुकी है। संबंधित परीक्षा केन्द्र शीघ्रातिशीघ्र परीक्षा सामग्री भेजें, ताकि परीक्षा परिणाम एवं सर्टिफिकेट जैसे कार्य समय पर सम्पन्न हो सकें। **- ओ.पी. आचार्य (प्रबंधक-परीक्षा विभाग)**

मुक्त विद्यापीठ के परीक्षार्थी ध्यान दें

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ जयपुर की द्विवर्षीय विशारद एवं त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद के सैकेण्ड सेमेस्टर की परीक्षायें दिसम्बर 2012 में सम्पन्न हो चुकी है।

जिन परीक्षार्थियों ने अभी तक भी उत्तर पुस्तिकायें नहीं भेजी हों, कृपया वे अपनी उत्तर पुस्तिकायें तत्काल भेज देवें। **- ओ.पी. आचार्य (प्रबंधक-परीक्षा विभाग)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

नियमसार प्रवचन -

जीव का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 45-46वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलतः इसप्रकार है -

वण्णरसगंधफासा थीपुंसणउंसयादिपज्जाया।
संठाणा संहणणा सव्वे जीवस्स णो संति।।४५।।
अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।४६।।

(हरिगीत)

स्पर्श रस गंध वर्ण एवं संहनन संस्थान भी।
नर, नारि एवं नपुंसक लिंग जीव के होते नहीं।।४५।।
चैतन्यगुणमय आतमा अव्यक्त अरस अरूप है।
जानो अलिंगग्रहण इसे यह अर्निदिष्ट अशब्द है।।४६।।

वर्ण-रस-गंध-स्पर्श, स्त्री-पुरुष-नपुंसकादि पर्यायें, संस्थान और संहनन- ये सब जीव को नहीं है।

जीव को अरस, अरूप, अगंध, अव्यक्त, चेतनागुणवाला, अशब्द, अलिंगग्रहण (लिंग से अग्राह्य) और जिसे कोई संस्थान नहीं कहा है ऐसा जानो।

(गतांक से आगे ...)

सिद्ध तथा केवली भगवन्तों को केवलज्ञानरूपी पूर्ण कार्यशुद्धचेतना प्रगटी है।

कार्यपरमात्मा तथा कारणपरमात्मा को शुद्धज्ञानचेतना होती है। आत्मा शुद्ध चिदानन्दस्वरूप है - ऐसे कारणपरमात्मा का आश्रय करके, उसमें विशेष स्थिरता करके अपने में केवलज्ञान, केवलदर्शनादि दशा प्रगट की, उसे कार्यपरमात्मा कहते हैं। वह कार्यपरमात्मा केवली और सिद्ध हैं। ऊपर मिथ्यादृष्टि जीवों की बात करने के बाद, आत्मा का भान करके जो कार्य को अभी साध रहे हैं - ऐसे साधकों की बात

नहीं ली। साधक को ज्ञानचेतना होती है; परन्तु आंशिक विकार और अपूर्णता है, अतः परिपूर्ण ज्ञानचेतना नहीं होती, इसलिये साधक की चर्चा यहाँ गौण की है। यहाँ तो पूर्ण कार्यरूप ज्ञानचेतना प्रगट की है - ऐसे केवली तथा सिद्धभगवान की बात ली है। केवली तथा सिद्धों को कारणशक्तिरूप-ज्ञानचेतना थी, उसमें से कार्य प्रगट हो गया है, उन्हें मात्र ज्ञान का अनुभव है।

अभव्य तथा निगोद से लेकर सिद्धों तक सभी जीवों को कारणशुद्ध-ज्ञानचेतना होती है।

अब कारणपरमात्मा के भी शुद्धज्ञानचेतना होती है। उसका कथन करते हैं -

कारणपरमात्मा अर्थात् शक्तिरूप शुद्धस्वभाव निगोद से सिद्धों तक के जीवों में एकरूप है। त्रिकाल एकरूप भगवान को कर्मचेतना, कर्मफलचेतना व अपूर्ण शुद्धज्ञानचेतना नहीं होती; किन्तु शुद्धज्ञानचेतना उत्पाद-व्यय रहित एकरूप सभी जीवों के होती है। तुम्हें धर्म और आनन्द प्रगट करना है तो आत्मा में स्थित ज्ञान और आनन्द का अवलम्बन लो।

आत्मपदार्थ किसी के कारण नहीं होता तथा आदि-अन्त से रहित है। शुद्ध चैतन्यस्वभाव में शुद्धज्ञानचेतना है, गुण तो त्रिकाल है।

यहाँ उत्पाद-व्ययरहित ध्रुव एकरूपपर्याय त्रिकाल शुद्धज्ञानचेतना की बात चल रही है। उसके आधार से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रदशा अथवा कार्यशुद्धज्ञानचेतना प्रगट होती है। निगोदिया, मिथ्यादृष्टि तथा अभव्य जीवों में भी कारणशुद्धज्ञानचेतना सदा विद्यमान है; उसमें फेर-फार नहीं है। जिस कारण का सेवन करने से कार्य प्रगट हो, वह कारणपर्याय-शुद्धज्ञानचेतना उत्पाद-व्यय रहित त्रिकाल एकरूप पर्याय की बात चल रही है। मिथ्यादृष्टि जीवों को इसका भान नहीं है और वे कारण का आश्रय नहीं करते; अतः उनको कार्यरूप फल प्राप्त नहीं होता।

केवली तथा सिद्ध भगवन्तों को शुद्धज्ञानचेतना होने से वे फलरूप परम आनन्द को भोग रहे हैं। इसीलिए कार्यसमयसार तथा कारणसमयसार की सहजफलरूप शुद्धज्ञानचेतना होती है।

कार्यसमयसार केवली तथा सिद्ध भगवन्तों के परिपूर्ण ज्ञानचेतना प्रगटी है,

अतः उसके फलरूप में वे निराकुल आनन्द को भोगते हैं। संसारदशा में निगोद का जीव विकार के फल में हर्ष-शोक के अनुभव में रुका है, त्रसजीव कर्मसहित हर्ष-शोक के फल को भोगते हैं। सिद्ध तथा केवली भगवान पूर्ण निराकुल आनन्द भोगते हैं। केवली के शुद्धज्ञानचेतना है, इसलिए सहजफलरूप अर्थात् आनन्ददशा होती है। ज्ञान और आनन्द का अविनाभावी सम्बन्ध बताया है। (साधक की बात गौण की है) केवली तथा सिद्ध भगवान ज्ञानचेतना के कार्य सहित आनन्द के फल को अनुभव करते हैं।

निगोद से लेकर सिद्धों तक सभी जीवों को त्रिकाली कारण शुद्धचेतना है, इसलिये उनमें सहज आनन्द अनादि-अनन्त रहता है।

अब, कारणसमयसार को भी सहजफलरूप शुद्धज्ञानचेतना होती है - ऐसा समझाते हैं। त्रिकाल कारणपरमात्मा अर्थात् निगोद से लेकर सिद्धों तक के सभी जीवों को सहजफलरूप शुद्धज्ञानचेतना होती है। जो फल प्रगट होता है, वह तो कार्यसमयसार के होता है, उसका कथन हो चुका है। यहाँ तो त्रिकालफल, त्रिकालआनन्द एकरूप अनादि-अनन्त उत्पाद-व्ययरहित सभी आत्माओं में रहता है, उसकी चर्चा करते हैं। कारणपरमात्मा को शुद्ध ज्ञानचेतना अनादि-अनन्त एकरूप हैं; अतः उसके फलस्वरूप आनन्ददशा भी त्रिकाल एकरूप है।

कोई **प्रश्न** करे कि फल तो उत्पादपर्याय में होता है, इस त्रिकालीपर्याय में फल किसप्रकार है ?

उसका **समाधान :** भाई ! जैसे शुद्धज्ञानचेतना त्रिकाली एकरूप है, वैसे ही आनन्द भी त्रिकाली एकरूप है। यहाँ कारणपर्याय की बात चलती है, गुण की बात नहीं है। कार्यसमयसार के जो सहजफल कहा वह सादि-अनन्त है और यहाँ कारणसमयसार के जो सहजफल कहा है वह अनादि-अनन्त है। यहाँ द्रव्यदृष्टि का विषय बताते हैं। तुझे मोक्षरूपी कार्य प्रगट करके आनन्द चाहिये तो त्रिकालीकारणशुद्धज्ञानचेतना की, उसके त्रिकालीफल आनन्दसहित कारणपर्याय अर्थात् त्रिकाल एकरूप रहनेवाली पर्यायसहितवाला कारणपरमात्मा की श्रद्धा, ज्ञान और एकाग्रता कर; इससे मोक्षदशा प्रगट होगी।

(क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आचार्यदेव ने केवलज्ञान और श्रुतज्ञान में किस अपेक्षा से समानता की है?

उत्तर : जैसे भगवान केवली केवलज्ञान से आत्मा का अनुभव करने से केवली हैं, वैसे ही हम भी श्रुतज्ञान से केवल शुद्ध आत्मा का अनुभव करने से श्रुतकेवली हैं - ऐसा आचार्यदेव कहते हैं। अत: विशेष जानने की आकांक्षा से बस होओ ! स्वरूप निश्चलता ही बनी रहे। आहाहा ! देखो मुनि अपनी दशा की बात करते हैं कि केवली की तरह हम भी केवल शुद्ध आत्मा का अनुभव करने से श्रुतकेवली हैं। जिसप्रकार अमृतकुण्ड को कोई सूर्य के प्रकाश से देखे और कोई उसी को दीपक के प्रकाश से देखे तो दृष्टिगोचर वस्तु में कोई अन्तर नहीं है; उसी प्रकार केवली तो केवलज्ञान-सूर्य से अमृतकुम्भ आत्मा को देखते हैं और श्रुतकेवली दीपक समान श्रुतज्ञान से अमृतकुम्भ आत्मा को देखते हैं। यद्यपि सूर्य और दीपक के प्रकाश में अन्तर है, तथापि उनके द्वारा देखी गई वस्तु में कोई अन्तर नहीं है। ऐसा कहकर केवली के साथ समानता की है।

प्रश्न : सूक्ष्म उपयोग का अर्थ क्या है ?

उत्तर : अन्दर आत्मा ध्रुववस्तु पड़ी है, उसको पकड़नेवाला उपयोग सूक्ष्म है। जो पुण्य-पाप के परिणामों में ही रुक जाय, वह उपयोग स्थूल है।

प्रश्न : उपयोग सूक्ष्म कैसे हो ?

उत्तर : अन्दर में आत्मवस्तु अचिन्त्य सामर्थ्यवाली पड़ी है, उसकी रुचि करे तो उपयोग सूक्ष्म होकर अन्दर में झुकता है।

प्रश्न : धारणा का विषय आत्मा है या नहीं ?

उत्तर : बाहर के उघाड़ से होनेवाली धारणा का विषय आत्मा नहीं है। किन्तु सम्यक्-मतिज्ञान में आत्मा को जानकर जो धारणा हुई है, उसका विषय आत्मा है; इस धारणा से ज्ञानी पुन: पुन: आत्मा का स्मरण करता है।

प्रश्न : स्मरण होता है अर्थात् निर्विकल्प दशा हो जाती है ?

उत्तर : स्मरण ही निर्विकल्पता है। निर्विकल्प स्मरण में अतीन्द्रिय आनन्द की

माला फिरती है। इस निर्विकल्प स्मरण से मोह छूटता है; विकल्प से तो मोह नहीं छूट सकता।

प्रश्न : सामान्यज्ञान और विशेषज्ञान में भेद और उनका फल बतलाते हुए स्पष्ट कीजिए कि सम्यग्दृष्टि इनमें से अपना ज्ञान किसे मानता है ?

उत्तर : विषयों में एकाकार हुए ज्ञान को विशेषज्ञान अर्थात् मिथ्याज्ञान कहते हैं और उनका लक्ष्य छोड़कर अकेले सामान्यज्ञान-स्वभाव के अवलम्बन से उत्पन्न हुए ज्ञान को सामान्यज्ञान अर्थात् सम्यग्ज्ञान कहते हैं। ज्ञानस्वभाव में एकाकार होकर प्रगट हुये ज्ञान को सामान्यज्ञान-वीतरागीज्ञान कहते हैं, उसी को जैनशासन अथवा आत्मानुभूति कहते हैं। सामान्यज्ञान में आत्मा के आनन्द का स्वाद आता है। विशेष ज्ञान अर्थात् इन्द्रियज्ञान में आत्मा के आनन्द का स्वाद नहीं आता; अपितु आकुलता और दु:ख का स्वाद आता है।

परद्रव्य का अवलम्बन लेकर जो ज्ञान होता है, वह विशेषज्ञान है। भगवान की वाणी सुनकर जो ज्ञान हुआ वह इन्द्रियज्ञान है - विशेषज्ञान है; वह आत्मा का ज्ञान-अतीन्द्रियज्ञान-सामान्यज्ञान नहीं। ज्ञानी को आत्मा का ज्ञान हुआ है, उस सामान्यज्ञान को ज्ञानी अपना ज्ञान जानता है और पर को जानता हुआ इन्द्रियज्ञान जो अनेकाकाररूप परसत्तावलम्बी ज्ञान होता है, उसको अपना ज्ञान मानता नहीं। जैसे परज्ञेय को अपना मानता नहीं, वैसे ही पर के ज्ञान को भी अपना ज्ञान मानता नहीं। जिसमें आनन्द का स्वाद आता है, ऐसे आत्मज्ञान को ही अपना ज्ञान मानता है।

प्रश्न : आत्मज्ञान हो जाने पर तो यह व्रतादि राग है, ऐसा भासित हो जाता है; परन्तु प्रथम तो आत्मज्ञान जल्दी होता नहीं है न ?

उत्तर : जल्दी का क्या अर्थ ? इसका अभ्यास करना चाहिये कि राग क्या है ? आत्मा क्या है ? मैं त्रिकाल टिकने वाली चीज कैसी हूँ ? इत्यादि अभ्यास करके, ज्ञान करके, राग से भिन्न आत्मा का अनुभव करना - यह पहली वस्तु है। आत्मा को जाने बिना समस्त क्रियाकाण्ड व्यर्थ हैं। आत्मा अन्दर आनन्दस्वरूप भगवान चैतन्य का पुँज प्रभु है। उसका ज्ञान न हो, अन्तर-दशा का वेदन न हो, तब तक उसका क्रिया-काण्ड सब झूठा है। सम्यग्दर्शन प्राप्त करना दुर्लभ है; अत: सर्वप्रथम सम्यग्दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये।

समाचार दर्शन -

ढाईद्वीप में शिलान्यास सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट एवं श्री पंच लश्करी गोठ ट्रस्ट रामाशाहजी मंदिर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 16-17 फरवरी को शिलान्यास एवं प्रभावना यात्रा का आयोजन किया गया।

दिनांक 16 फरवरी को रामाशाह मन्दिर में प्रात: रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, श्री शीतलजी पाण्डे उज्जैन, पण्डित अकलंकजी दिल्ली, पण्डित विवेकजी इन्दौर, पण्डित विवेकजी दिल्ली, पण्डित विकासजी जैन इन्दौर, पण्डित ज्ञायकजी जैन मुम्बई एवं पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन के सहयोग से संपन्न हुआ। दोपहर में श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रौढकक्षा का लाभ मिला। सायंकाल पण्डित सुनीलजी जैनापुरे के प्रवचन में 192 जिनवाणी विराजमान होने के वचन प्राप्त हुये।

दिनांक 17 फरवरी को प्रात: रामाशाह मंदिर मल्हारगंज से ढाईद्वीप जिनायतन तक 201 प्रतिष्ठेय जिनप्रतिमाओं की विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर रामाशाह मंदिर में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे राजकोट, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

दोपहर में ढाईद्वीप जिनायतन की 20 हजार वर्गफीट की छत का शिलान्यास श्रीमती गुणमाला भारिल्ल के करकमलों से हुआ। साथ में श्री कान्तिभाई मोटानी मुम्बई, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं श्री मुकेशजी जैन के परिवार ने भी शिलान्यास की ईंटें रखीं। इसके पूर्व डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का लाभ मिला।

ढाईद्वीप जिनायतन में दिनांक 30 दिसम्बर 2014 से 7 जनवरी 2015 तक होने वाले पंचकल्याणक की घोषणा डॉ. भारिल्ल द्वारा की गई, जिसके प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा होंगे।

इस अवसर पर 700 परिवारों को सिंहद्वार का मोमेन्टो एवं प्रभावना श्री रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल पूना के सहयोग से वितरित की गई।

कार्यक्रम में श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल, श्री अनिलजी कामदार मुम्बई, श्री महेन्द्रभाई भालाणी मुम्बई, शशिबाला जैन मुम्बई, श्री अशोकजी घीया मुम्बई, रमाबेन देवलाली, श्री भरतजी मोदी इन्दौर, श्री अशोकजी पाटनी इन्दौर, श्री कमलजी सेठी (अध्यक्ष-गोम्मटगिरि ट्रस्ट) एवं श्री एम.के. जैन इन्दौर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ श्री ऋषभदेव सर्वोदय फाउण्डेशन न्यास द्वारा नये बस स्टेण्ड पर पण्डित चुन्नीलालजी शास्त्री एवं श्रीमती हीराबाई की स्मृति में श्री महेन्द्रकुमार अजितकुमार बंसल परिवार द्वारा प्रदत्त भूमि पर नवनिर्मित तीर्थधाम आदीश्वरम् का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव रविवार, दिनांक 27 जनवरी से शुक्रवार, दिनांक 1 फरवरी 2013 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों के साथ सानन्द संपन्न हुआ। इस अवसर पर नवनिर्मित भव्य जिनमन्दिर में कमलपुष्प की वेदी पर श्री आदिनाथ भगवान की 61 इंची पद्मासन ताम्रवर्णी पाषाण की जिनप्रतिमा के साथ अन्य नौ मनोहारी वेदियों पर नौ जिन प्रतिमाएँ विधिपूर्वक विराजमान की गयी।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में सम्पन्न हुए इस महामहोत्सव में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के पंचकल्याणक सम्बन्धी प्रासंगिक व्याख्यानों का विशेष लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला। इनके अतिरिक्त ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, पण्डित सतीशचन्दजी पिपरई, पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री प्रतापगढ, ब्र. महेन्द्रकुमारजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा आदि विद्वानों के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि प्रतिष्ठाचार्य पण्डित राजेन्द्रकुमारजी टीकमगढ ने ब्र. महेन्द्रजी इन्दौर, पण्डित कैलाशचंदजी टीकमगढ, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, ब्र. अंकित जैन इन्दौर के सहयोग से तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न करायी गयी। सम्पूर्ण मंच संचालन एवं निर्देशन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

महोत्सव की आरंभवेला में ध्वजारोहण श्री चौधरी विजयकुमार विनयकुमार-प्रमोदकुमारजी बजाज परिवार चन्देरी ने, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री आनन्दजी रोकड़िया परिवार चन्देरी ने एवं प्रतिष्ठामंच का उद्घाटन श्री सुरेशचंद राजीवकुमार सिंगाडा परिवार ने किया।

जन्मकल्याणक के पावन प्रसंग पर बाल तीर्थंकर के प्रथम अभिषेक का सौभाग्य श्री निर्मलकुमारजी अरविन्दजी सर्राफ चन्देरी को एवं प्रथम पालना झूलन का सौभाग्य श्री जिनेन्द्रकुमार महावीर शनिचरा परिवार चन्देरी-बैंगलोर एवं द्वितीय श्रीमती आशा-शांतिकुमारजी पाटील परिवार जयपुर को मिला। राजा श्रेयांस व राजा सोम बनकर आहारदान डॉ. महेन्द्रजी जैन व श्री मुन्नालाल करतारचंदजी जैन (अभिलाषा पेट्रोल पंप) ललितपुरवालों ने दिया।

मूलनायक भगवान श्री आदिनाथ का जिनबिम्ब भेंट व विराजमान करने का सौभाग्य श्री प्रेमचन्दजी-संजय-शैलेन्द्र-सुबोध गुरहा परिवार रायपुर-जयपुर को एवं विधिनायक का श्री महेन्द्रकुमारजी अरुणकुमार बंसल परिवार चन्देरी को मिला। महोत्सव के सौधर्म व शचि इन्द्राणी श्री प्रेमचन्दजी व श्रीमती राजेश गुरहा रहे। जिनमंदिर व वेदी निर्माण में भी आपका महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री राजकुमारजी-मीना इमलया ललितपुर,

महाराजा नाभिराय-मरुदेवी श्री कोमलचंदजी-कुसुम रानीपुर एवं यज्ञनायक-नायिका श्री सुरेशबाबू वकील-स्नेह ललितपुर थे।

साधर्मियों के सात्सल्यभोज हेतु श्री निर्मलजी कठरया एवं श्री अनिल रोकडिया का विशेष सहयोग रहा।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों को प्रासंगिक भक्ति-गीतों से श्री जैन संगीत सरिता छिंदवाड़ा के सहयोग से श्री अनिलजी व दीपकजी धवल भोपाल ने मधुरता प्रदान की। अष्टकुमारिकों के साथ जयपुर की छात्राओं ने कु.परिणति-प्रतीति पाटील के निर्देशन में प्रासंगिक नृत्यों की भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

महोत्सव को सफल बनाने में श्री अखिलजी बंसल व समग्र बंसल परिवार का मुख्य योगदान रहा। महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री अमोलकचंदजी कठरया एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ ही सकल दि. जैन समाज, खन्दार सेवा दल एवं महिला मण्डल चन्देरी का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

सिद्धचक्र मण्डल विधान सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ बजरंग नगर में श्री ज्ञानचन्द एवं श्रीमती कमलेश जैन (जैन---परिवार) द्वारा दिनांक 11 से 18 फरवरी तक सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा श्री दीपक धवल भोपाल एवं श्री विवेक कुमार जैन दलपतपुर के सहयोग से संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर (प्राचार्य-टोडरमल महाविद्यालय) के साथ-साथ स्थानीय विद्वान पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही श्रीमती कमला भारिल्ल द्वारा प्रौढ कक्षा का लाभ मिला।

विधान बहुत उत्साह से संपन्न हुआ। ढाईद्वीप के सर्वेसर्वा श्री मुकेशजी जैन का तन मन धन से सहयोग था। इसमें जैनसमाज के हजारों लोगों ने सोत्साह भाग लिया।

रात्रि में प्रवचन के उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों (कवि सम्मेलन, तम्बोला, इन्द्रसभा) का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री ज्ञानचंदजी कमलेशकुमार की ओर से टोडरमल महाविद्यालय के एक छात्र हेतु पाँच वर्ष के लिये 1 लाख 51 हजार रूपये प्राप्त हुये।

श्री पूनमचंद सतभैया परिवार द्वारा ध्वजारोहण के उपलक्ष्य में 50 हजार रूपये दान में दिये गये। इस अवसर पर श्री मुकेशजी जैन द्वारा जयपुर से मंगाया साहित्य आधी कीमत में विक्रय किया गया तथा विदाई की बेला, संस्कार, इन भावों का फल क्या होगा तथा छहढाला का सार पुस्तकें नि:शुल्क वितरित की गई। **– पूनमचंद सतभैया, इन्दौर**

अमृत महामहोत्सव सानन्द संपन्न

तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ तीर्थधाम मंगलायतन की स्थापना के दस वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ एवं कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 31 जनवरी से 6 फरवरी तक मंगलायतन अमृत महामहोत्सव का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अरुणजी जैन अलवर, पण्डित अरहंतजी झांझरी उज्जैन, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित रतनचंदजी चौधरी कोटा, ब्र. कल्पनाबेन इत्यादि विद्वानों द्वारा प्रवचनों, कक्षाओं एवं गोष्ठियों के माध्यम से लाभ प्राप्त हुआ।

महोत्सव में 'जैनदर्शन की आराधना और प्रभावना', जैनदर्शन का न्याय, मुमुक्षु की पात्रता, दृष्टि का विषय, ध्यान : एक अनुशीलन, पूज्य गुरुदेवश्री एवं उनका तत्त्वज्ञान आदि विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मंगलार्थी छात्रों द्वारा 'ज्ञानगोष्ठी', डी.पी.एस. की छात्राओं द्वारा 'मातादेवी चर्चा', मंगलार्थी छात्रों द्वारा भगवान महावीर के पाँच नामों की नाटिका, राजाओं द्वारा 'तपकल्याणक सभा', उज्जैन मुमुक्षु मण्डल द्वारा 'करो सिद्धों से टेलिफोन' आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इसके अतिरिक्त मंगलार्थी प्रतिभा सम्मान समारोह का भी आयोजन हुआ, जिसमें मंगलार्थी छात्रों द्वारा वर्षभर में किये गये उल्लेखनीय कार्यों हेतु प्रशस्ति-पत्र एवं पारितोषिक देकर उनका सम्मान किया गया।

महोत्सव के अवसर पर ही मंगलायतन विश्वविद्यालय की ओर से घोषणा की गई कि मंगलायतन विश्वविद्यालय दर्शन विज्ञान केन्द्र के माध्यम से जैनदर्शन के विविध पाठ्यक्रम संचालित करेगा। डॉ. जयन्तीलाल जैन ने सभी पाठ्यक्रमों की रूपरेखा से जनसमुदाय को अवगत कराया। इसके अतिरिक्त पण्डित कैलाशचन्द्रजी की पुण्य स्मृति में उनके परिवारजनों द्वारा **पण्डित कैलाशचन्द्र जैन फाउण्डेशन** की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य पण्डितजी द्वारा लिखित साहित्य का प्रकाशन एवं उपलब्धता के साथ साथ अन्य विशिष्ट सत्साहित्य का प्रकाशन है। महोत्सव में श्री शुभचन्द्राचार्य विरचित परमाध्यात्म तरंगिणी तथा भट्टारक श्री ज्ञानभूषण द्वारा रचित तत्त्वज्ञान तरंगिणी नामक ग्रन्थों का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का भी आयोजन किया गया। अन्तिम दिन आदिनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक आयोजित किया गया। कार्यक्रम में लगभग 25 हजार रूपये का सत्साहित्य जन-जन तक पहुँचा।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में मंगलार्थी छात्रों के सहयोग से संपन्न हुये।

प्रथम वार्षिकोत्सव सानंद संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम जिनालय के प्रथम स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 3 फरवरी को श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री आदिनाथ एवं भरत बाहुबली विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में अष्ट देवियों द्वारा नृत्य नाटिका, श्रीमती भावना बाकलीवाल परिवार द्वारा 'नियम का फल' नामक नाटक व श्री दि. जैन महासमिति की वैशाली नगर ईकाई द्वारा जैन नियमों का समावेश करते हुए एक कव्वाली आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। ट्रस्ट द्वारा सभी को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम में मंगल कलश विराजमानकर्ता लुहाड़िया परिवार, श्री त्रिलोकचंदजी सोनी, श्री अजितकुमारजी पाटनी परिवार, श्री जितेन्द्रजी सेठी इन्दौर एवं श्री दिनेशजी पाण्डे मुम्बई रहे। विधान का उद्घाटन श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ एवं ध्वजारोहण श्री प्रेमचंदजी जैन (अध्यक्ष-मुमुक्षु मण्डल, अजमेर) ने किया। कार्यक्रम में सैकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

समस्त कार्यक्रमों में श्री वीतराग महिला मण्डल की सदस्याओं श्रीमती अनिता कासलीवाल, अर्चनाजी, इन्द्राजी, रजनीजी, प्रभाजी एवं श्री प्रकाशजी गट्टी, श्री मनोजजी कासलीवाल, श्री निर्मलजी बड़जात्या, श्री मनमोहनजी पाटनी, पत्रकार अंकलेश जैन का विशेष सहयोग रहा।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल ने संपन्न कराये।

व्याख्यानों का लाभ मिला

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 12 से 19 जनवरी तक पण्डित अनिलजी जैन इंजी. इन्दौर द्वारा टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों को व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर प्रात:काल पण्डित अनिलजी द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार की 14-15 गाथा पर प्रवचन हुये। महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक उनके प्रवचनों का लाभ लिया। दिनांक 19 जनवरी को पण्डितजी का परिचय टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों को दिया गया। यद्यपि वे अपने निजी कार्य हेतु जयपुर पधारे थे, तथापि उन्होंने विद्यार्थियों को प्रवचनों का लाभ प्रदान किया, एतदर्थ उनका आभार व्यक्त किया गया एवं पुन: आने के लिये आमंत्रित किया गया। पण्डितजी ने भी भविष्य में आकर विद्यार्थियों को अपने प्रवचनों के माध्यम से लाभ प्रदान करने की भावना व्यक्त की।

फैडरेशन का वार्षिक अधिवेशन संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री दि.जैन परमागम मंदिर जैन स्टोन बहोड़ापुर में दिनांक 15 जनवरी को अ. भारतीय जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर ग्वालियर का वार्षिक अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: सम्मेदशिखर विधान के उपरान्त संपन्न अधिवेशन में मंगलाचरण एवं वर्ष 2012 की 'प्रगति प्रतिवेदन रिपोर्ट' के पश्चात् 2013 की कार्ययोजना हेतु पण्डित श्यामलालजी विजयवर्गीय, पण्डित महेशचंदजी ग्वालियर, पण्डित अजितजी 'अचल', पण्डित अशोकजी भाऊ का बाजार, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अजितजी गोरमी, श्री पुष्पेन्द्रजी जैन भिण्ड आदि ने अपने विचार रखे। 'सर्वोदय अहिंसा अभियान' के नववर्ष कलैण्डर का विमोचन एवं शहर में संचालित पाठशाला के प्रभारियों को सम्मानित किया गया। ग्वालियर शाखा द्वारा 2012 में संचालित गतिविधियाँ निम्नानुसार है -

1. पाठशाला का संचालन, 2. तीर्थयात्रा का आयोजन, 3. शिक्षण शिविर का आयोजन, 4. सर्वोदय अहिंसा अभियान, 5. क्षमावाणी मिलन समारोह, 6. प्रश्नपत्र प्रतियोगिता का आयोजन, 7. सत्साहित्य प्रकाशन, 8. मासिक ज्ञानगोष्ठी का आयोजन।

संचालन प्रदेश संयोजक व ग्वालियर शाखा के निदेशक/महामंत्री पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ने किया। **- सुनील जैन, ग्वालियर**

नववर्ष स्नेह-मिलन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 25 जनवरी को वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल द्वारा नववर्ष के उपलक्ष्य में एक स्नेह-मिलन का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत श्रीमती सुशीलाजी जैन द्वारा तीर्थक्षेत्रों की वंदना का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सरोजजी कटारिया द्वारा की गई। सभी महिलाओं ने कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा संचालित 'श्री महावीर विद्या निकेतन' का षष्टम् सत्र दिनांक 15 जून 2013 से प्रारंभ होने जा रहा है। प्रवेश इच्छुक छात्र प्रवेश फार्म 10 अप्रैल तक जमा करते हुये 18 से 21 अप्रैल तक होने वाले साक्षात्कार शिविर में अवश्य पधारें। प्रवेश फार्म नागपुर कार्यालय से अथवा **www.vidyaniketan.weebly.com** से प्राप्त कर सकते हैं। प्रवेशार्थी को पालक सहित साक्षात्कार शिविर में उपस्थित रहना अनिवार्य है। इस वर्ष मात्र 10 छात्रों को ही प्रवेश दिया जायेगा। संपर्क सूत्र - 'श्री महावीर विद्या निकेतन' नेहरु पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर 440022 (महा.) फोन - (0712)2772378, 697925, 2765200, 9373005801, 9860140111, 8087216959, 8446551330 **- मनीष शास्त्री सिद्धांत, अधीक्षक**

170 तीर्थंकर मण्डल विधान संपन्न

रतलाम (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिग. जैन चैत्यालय के तत्त्वावधान में दिनांक 9 से 13 जनवरी 2013 तक श्री 170 तीर्थंकर मण्डल विधान बहुत उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा पूजन के भावार्थ व क्रिया-परिणाम-अभिप्राय विषय पर एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा नय-विवक्षा विषय पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत 'भरत बाहुबली' नाटक का प्रोजेक्टर पर प्रदर्शन एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा के निर्देशन में 'आदर्श जैन दम्पत्ति' व 'जैनत्व के संस्कार' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में पण्डित अनिलजी पाटोदी बड़नगर, पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा एवं श्री जम्बुकुमारजी पाटोदी रतलाम का भी लाभ समाज को प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अभयजी व पण्डित राजकुमारजी के निर्देशन में पण्डित अनिलजी धवल व श्री दीपकजी धवल द्वारा संपन्न कराये गये।

हार्दिक बधाई

1. बापूनगर-जयपुर (राज.) निवासी **श्री अनुज जैन** पुत्र श्री ताराचन्द जैन ने दिनांक 23 जनवरी को पुत्र एवं पुत्री (युगल) के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1100/- रुपये प्रदान किये।

2. जनता कॉलोनी-जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती चन्द्रा जैन के सुपौत्र व अनिल जैन-संध्या जैन के सुपुत्र **चि. चिराग** का विवाह **सौ. अपूर्वा** जैन के साथ दिनांक 24 जनवरी को संपन्न हुआ, इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 250/- रुपये प्राप्त हुये।

3. बम्बई निवासी श्री ब्रजलाल दलीचन्दजी हताया की सुपुत्री **सौ. भाविका जैन** का विवाह श्री सुरेशकुमारजी कोठारी के सुपुत्र **चि. निशांत कोठारी** के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

4. ग्रान्टरोड़-मुम्बई निवासी श्री जवेरचन्दजी के सुपुत्र **चि. कमलेश** का शुभ विवाह **सौ. दीपिका जैन** के साथ हुआ। इस अवसर पर 500/- रुपये जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये।

उक्त सभी को वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 25 मार्च 2013	अलवर	विधान
26 व 27 मार्च 2013	कोटा(मुमुक्षु आश्रम)	अष्टाह्निका

पण्डित रतनचंदजी का अभिनन्दन

जयपुर (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन समाज बापूनगर सम्भाग द्वारा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के 80 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनके निवास पर सादर अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर सम्भाग के पदाधिकारी श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी (अध्यक्ष) व डॉ. राजेन्द्रकुमारजी जैन (मंत्री) द्वारा माल्यार्पण कर, शॉल ओढाकर एवं प्रतीक चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया। पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने संभाग की गतिविधियों की प्रशंसा की।

प्रशिक्षण शिविर की तिथि परिवर्तित

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित होगा। प्रशिक्षण शिविर में देवलाली पधारने हेतु समस्त मुमुक्षु समाज को हार्दिक आमंत्रण है। सभी साधर्मीजन इसी तिथि के अनुसार अपना रिजर्वेशन करवायें।

शोक समाचार

1. आगरा (उ.प्र.) निवासी पण्डित पदमचन्दजी सर्राफ के ज्येष्ठ सुपुत्र **श्री निर्मलकुमारजी सर्राफ** का दिनांक 23 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में 1100/- रुपये टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु प्राप्त हुये।

2. जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी श्री अभयकुमारजी जैन का दिनांक 3 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के एकाउन्टेन्ट श्री जवाहरलालजी की अनुजवधु थीं।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त करें-यही मंगल भावना है।

हार्दिक बधाई !

कोटा (राज.) निवासी श्री प्रेमचन्दजी बजाज का औद्योगिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा कार्यों के लिये गणतन्त्र दिवस के अवसर पर श्री शान्ति धारीवाल (नगरीय विकास, आवासन एवं स्वायत्त शासन मंत्री) द्वारा **'युवा उद्योग श्री'** उपाधि से सम्मानित किया गया।

एतदर्थ वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।